ऋतु संग पर्व

काव्य संग्रह

श्रीमति उमा सुहाने

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

ऋतु संग पर्व

काव्य संग्रह

श्रीमती उमा सुहाने

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-061-2"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं मिडिया प्रभारी - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **उमा सुहाने**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ४०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

RITU SANG PARV BY UMA SUHANE

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

प्रकृति की देन मैं ईश्वरीय विधा अनुसार ऋतु का जगत में प्रभाव रहना सुनिश्चित है ठंड गर्मी बरसात वसंत सभी ऋतु का अपना अलग अलग अस्तित्व है हर किसी के बिना भूमंडल अधूरा है इनकी अनुभूति मानव मन को रोमांचित एवं आल्हादित करती हैं।

भारतीयों को अपनी संस्कृति पर भी गर्व है दूसरे देशों की तुलना में उन्होंने एकता प्रसन्नता और आपस में प्रेम व्यवहार बनाए रखने वर्ष में कुछ पर्वों का आयोजन समय-समय पर निर्धारित किया है त्योहारों के प्रति अभिरुचि से मनुष्यों में कार्यशीलता नवीनतम विकास और उल्लास मय जीवन जीने का भाव जागृत होता है हर मौसम के रंग में भीगते हुए पर्वों के प्रति नई चेतना का संचार होता है।

सामाजिक एवं राष्ट्रीय गतिविधियां जनमानस को कैसे प्रभावित कर आनंद विभोर करती हैं इसका उल्लेख कविता के माध्यम से देने का प्रयास किया है।

उमा सुहाने

अनुक्रमणिका

1.	गणेश उत्सव	5
2.	नवरात्रि	6
3.	बारहमासी मास	7
4.	राखी	8
5.	होली	9
6.	दीवाली	10
7.	गणतंत्र दिवस	11
8.	स्वतंत्रता दिवस	12
9.	शीत ऋतु	13
10.	ग्रीष्म ऋतु	14
11.	वर्षा ऋतु	15
12.	बसंत आगमन	16

गणेश उत्सव

भादो माह गणेश जी आए, दस दिन सब उत्सव मनाए।
जगह-जगह बैठाए गणेश, तीन लोक के प्यारे देवेश।
गणपतिजी का रूप निराला, सारे जग में फैला उजाला।
ये गणेश पर्व है मंगलकारी, सेवकों,पर कृपा करें भारी।
प्रथम पूजन करते नर नार, सारे जग में जय जयकार।
चारभुजा गजमुख एकदंत, मोहक छवि महिमा अनंत।
विद्या बुद्धि बल विवेक, दीनो पर करें कृपा अनेक।
रिद्धि सिद्धि बामविराजे पुत्र, शुभ लाभ संग में राजे।
हे देव सुख देते दुख हरते, भक्तों का कल्याण करते।
मातृभक्त प्यारे गणेश, सबका हरतेपल में क्लेश।
जय जय शिव गौरी नंदन, सब कर ते प्रेम से वंदन।

नवरात्रि

नवरात्रि चैत्र आश्विन वर्ष में आए दो बार
अक्षय शक्ति सुख समृद्धि देती पूजे ये संसार।
नवदुर्गा नौ रूप में आई मां कर सोलह सिंगार
कितना सुंदर कितना प्यारा लगता ये दरबार।
१. प्रथम रूप शैलपुत्री का ,द्वितीय ब्रह्मचारिणी
भक्तों का मंगल करने, आई कमल विहारिणी।
तृतीय रूप चंद्रघंटा का ,करतीं जग विस्तार
कितना सुंदर कितना प्यारा लगता ये दरबार
२. चतुर्थ रूप कुष्मांडा का, पंचम स्कंदमाता
दर्शन करने जो भी आए, खाली हाथ न जाता।
लाल चुनरिया ओढ़े मैया, आई सिंह सवार
कितना सुंदर कितना प्यारा, लगता ये दरबार।
३. षष्ठम रूप कात्यायनी का, मानव पीड़ा हरती
सप्तम रूप कालरात्रि का, दुष्टों का संहार करती।
दयामई करुणामई मां, भरती सबके भंडार
कितना सुंदर कितना प्यारा, लगता ये दरबार।
४. अष्टम रूप महागौरी का ,छटा निराली दिखती
शरण मां की जो भी आए, आस पूरी करती।
अपनी कृपा दृष्टि डालकर, करती जन उपकार
कितना सुंदर कितना प्यारा, लगता यह दरबार।
५. नवम रूप सिद्धिदात्री का, सबको निहाल करती
तन मन धन यश देकर, जनकल्याण करती।
हर रूप अदम्य शक्ति, तीनो लोक में जै जैकार
कितना सुंदर कितना प्यारा, लगता ये दरबार।

बारह मास पर्व

बारा मास का सुन लो विवरण, ठुमक ठुमक कर आया
हरि का चलता चक्र जगत में, घूम घूम कर आया।
चैत्र मास ने संवत पलटा, नूतन वर्ष चमकता आया
नौदेवी के द्वार खुले और राम जन्म पर मन हरषाया
बैसाख जेठ में तपी दोपहरी, धरा में सूखापन आया।
अक्षयतृतीया और शादी के मौसम से मन भरमाया।
अषाढ़ का आया महीना, घुमड़ घुमड़ कर बादल लाया
वर्षा ने प्यास बुझाई हरा भरा ये दृश्य बनाया।
बारा मास का सुन लो विवरण, ठुमक ठुमक कर आया
हरि का चलता चक्र जगत में घूम घूम कर आया।
सावन झूलेंराधा कृष्णा नाग पंचमी बीन बजाया,
झूम झूम नाचे मोर पपीहा फिर राखी त्योहार मनाया।
भादों कृष्ण जन्म और गणपति जी का उत्सव आया।
क्वांर ने पितरों का कर श्राध्द, नवदुर्गा से प्रेम लगाया
कार्तिक आया स्वच्छता लाया घर आंगन खूब सजाया,
छम छम करती लक्ष्मी आयीं दीपों ने अंधकार मिटाया।
बारा मास का सुन लो विवरण, ठुमक ठुमक कर आया
हरि का चलता चक्र जगत में घूम घूम कर आया।
अगहन पौष ने मिलकर, ठंड का हमको खौंफ दिखाया
छोटे-छोटे दिन दिखला कर रात में मीठी नींद सुलाया।
माघ का महीना शादी रचवायी, दंपति को सुख देने आया
फागुन आया होली खेली अला बला को दूर भगाया।
बारा महिनों नें मिल अपने, कार्यकलाप का इतिहास बनाया
वर्ष के हर माह सभी ने त्योहार प्रेम का लुफ्त उठायास
बारा मास का सुन लो विवरण, ठुमक ठुमक कर आया
हरि का चलता चक्र जगत में घूम घूम कर आया।

राखी

हरियाला सावन आया राखी आई,
हर बहनों ने मंगल साज सजाई।
तिलक लगाकर राखी बांध कुशल मनाती,
पावन पर्व में दोनों के मन खुशियां आती।
नभ में चमके जैसे चांद सितारा,
जग में भाई बहन का रिश्ता प्यारा।
राखी याद दिलाती है फरजो को,
भाई लेकर चलता सब धर्मों को।
बहना पतंग सी उड़ती आकाश निहारे,
भाई रक्षा डोर पकड़ पतंग संभाले।
कृष्ण ने बहन द्रोपदी की लाज बचाई,
ऐसा ही प्रेम रखें हर बहन से भाई,
स्नेह बंधन राखी भाई बहन का त्योहार,
प्रीत हो रिश्तो में रहे ऐसा व्यवहार।

होली

फागुन आया होली आयी आया रंगों का त्योहार,
सबके तन मन आन पड़ी खुशियों की बौछार।
होली ऐसा पर्व जिसमें अपनी अला बला सभी जलाते,
नए संवत में नए जोश में घर बाहर सब बैर भुलाते।
फिर मिलकर जश्न मनाते खुशियों से रंग बिखराते,
प्रेम भाव नहीं छुपाते हंसकर एक दूजे को गले लगातेस
अंधकार चीर लालिमा संग सूरज जब नीचे देखें,
मन थिर न रहे उनका नवरंगी अपनी किरणें फेकेंस
जिसे देख नन्हे-मुन्ने रंग भर खेल रहे पिचकारी,
सभी उमंग रंग में डूबे मना रहे होली नर नारी।
नीले पीले काले चमकीले रंगों का सब लेप चढ़ाते,
रंग बिरंगी टोपी वाले अजीब सा साज सजाते।
तन के कपड़ों की बात न पूछो रंग में डूबे पर लिपटे,
नए कपड़े हरदम पहनें आज पुराने ही सटे।
कुछ ऐसे होते रसिया ऐसे जो झरोखों से मन रमा लेते,
दूजों को रंग में डूबा देख अपना तन मन भिगा लेते।
कुछ बंदे बनेठने नवाब मिजाज साफ सा दरसाते,
कोई इन पर डाले रंग बदले में गाली बरसाते,
होली का रंग जमा कर ठिल मस्ती का उन्हें चादर।
रंगोत्सव की फुलझड़ी में न समझो कोई अनादर,
हम दिल से दिल जोड़कर कटुता की दीवार गिराए।
उमंगों की खुशियां लाकर इंद्रधनुषी रंग सजाएं।
फागुन आया होली आयी आया रंगों का त्योहार,
सबके तन मन में आन पड़ी खुशियों की बौछार।।

दीवाली

जगमग जगमग होय उजियाली,
कार्तिक माह अमावस होय दिवाली।
चारों दिशा दिखे छटा निराली,
खुशियां बिखराती आई दिवाली।
दीवाली पावन पर्व मन कलुषता जाती,
घर बाहर स्वच्छता सब ओर नजर आती।
हंसते करते गणेश लक्ष्मी शारदा पूजन,
विद्या बुद्धि धन पाने करते प्रेम से वंदन।
सबके गृह मंदिर मां लक्ष्मी आती,
अपनी करूणा ममता बरसाती।
उनके स्वागत में नर-नारी दीप जलाते,
फूल मालाओं से अभिनंदन करते।
रंगोली से घर घर द्वार सजाते,
बूंदी लड्डू लाई बताशा भोग लगाते।
फुलझड़ीं जलाकर बच्चे मुस्काते,
अनेक तरह फोड़ पटाखा खुशी मनाते।
दीपमालाएं गलियां रोशन करती,
विद्युत झालर जग में रौनक भरतीं।
मंद मंद शीतल पवन मन भरमातीं,
रात यामिनी जनमानस हिय हरषातीं।
पर्व कामना सौभाग्य मिले मन,
मधुबन सर्व सुखों का दीप जले।
हर आंगन तन मन में शक्ति शांति का हो डेरा,
सबके घर मां लक्ष्मी का रहे बसेरा।।

गणतंत्र दिवस

गणतंत्र दिवस नए सोपान का बिगुल बजता,
२६ जनवरी १९५० संविधान लागू का झंडा फहरता।
अंग्रेजी दासता दूर हुई गणतंत्र राष्ट्र घोषित हुआ,
स्वतंत्र देश में सर्वसम्मति सुझाव पोषित हुआ।
नियमों का पालन करते देश धर्म की रखते आन,
जीवन लक्ष्य सभी का यह करते राष्ट्र सम्मान।
दिल्ली में होता राष्ट्रपति प्रधानमंत्री का अभिनंदन,
भारतीय सशस्त्र नौसेना झांकियां करतीं प्रदर्शन।
गौरवमयी शक्तिशाली प्रजातंत्र राष्ट्र हमारा,
संस्कृति परंपरा विविधता में एकता का दिखे नजारा।
सच्ची सुदृढ़ राह चले कभी न अपना शीश झुकाए,
शांतिपूर्ण भाईचारा तभी विश्व में देश महान कहाए।
तिरंगा झंडा फहराते खुशी से यही हमारी पहचान,
राष्ट्रगान गाकर बोलें जय भारत जय हिंदुस्तान।।

स्वतंत्रता दिवस

पंद्रह अगस्त में फहराते विजय पताका करते यशगान,
खुशी मनाते भारतवासी है आजाद हमारा हिंदुस्तान।
सच्चे वीरों ने यहां रचा अपना गौरवशाली इतिहास,
आजादी का सूर्य उदय है लेकर एकता उमंग उल्लास।
आज स्वाधीन दिवस पर उन शहीदों को बारंबार नमन,
जिन्होंने मातृभूमि की रक्षा करने देश में लिया जनम।
कितनी मांओं ने अपने बेटों को विदा किया था,
कितनी सधवाओं ने अपना सिंदूर लुटा दिया था।
कितनी बहनों ने अपनी राखी को जला दिया था,
कितनों ने देश के खातिर अपना सुख त्याग दिया था।
तब मिली इस आजादी का करना हृदय से सम्मान,
ऐ हिंद वासियों अब स्वतंत्र देश की रखना शान।
वीर शिवाजी लक्ष्मीबाई नेता सुभाष ने जान गवाई,
भगत सिंह चंद्रशेखर तिलक ने ललकार दिखाई।
नेहरू गांधी कूदे सत्याग्रह आग में स्वसुख बलि चढ़ाई,
शौर्य गाथा रचने वाले वीर शहीदों ने विजय दिलाई।
स्वतंत्र देश में स्वतंत्र दिवस पर करना जन गण मन गान,
दुनिया के हर देशों से ऊपर चमके प्यारा हिंदुस्तान।।

शीत ऋतु

ठंडी का प्यारा मौसम आया,
शीत झकोरे लेकर आया।
पर्वत ओढ़े बर्फ की चादर,
कभी बीच झूम जाते बादर।
आग जलाकर गर्मी पाते,
ठिठुरती सर्दी दूर भगाते।
ऊनी कपड़ों की आई बहार,
सनन सनन चले बयार।
सुनहरी धूप लगती अच्छी,
ठंड की बात बिल्कुल सच्ची।
अगहन पौष माघ रहता जोर,
बीच हो शादी का भी शोर।
कभी गर्म भजिए की थाली,
कभी लेते चाय की प्याली,
दिन होते छोटे लंबी होती रातें,
रजाई अंदर होतीं मजे की बातें।

ग्रीष्म ऋतु

प्रकृति का नियम शिशिर ग्रीष्म वारिश आए,
मानव जीवन में मौसम भी जीने की राह बताए।
नमी दूर करें रोग भगाए कई स्थित में अनुकूल,
कूलर एसी का हो मजा तब ना रहे गर्मी प्रतिकूल।
रवि किरणों का जब बढ़ता भूमि पर तेज ताप,
पशु-पक्षी और जनमानस को होता संताप।
बैसाख जेठ की गर्म ज्वाला डूबता जग सारा,
नदी कूप सूख जाते मिले न कहीं जलधारा।
पेड़ पौधे मुरझा जाते झुलस जाते उपवन,
गर्मी से व्याकुल धरती चारों ओर रहे तपन।
गर्मी की उष्मा से पानी भाप बन ऊपर जाए,
काले बादल बनकर वारिश रूप में नीचे आए।।

वर्षा ऋतु

ग्रीष्म तांडव हुआ बंद ऋतु की रानी आई,
आषाढ़ सावन भादो गूंजी वर्षा बूंदों की शहनाई।
बादल गरजे बिजली चमके बदला प्राकृत रूप,
उमड़ घुमड़ कर मेघा बरसे विदा ले गई धूप।
शीतल पवन झकोरों से मुरझाई सृष्टि चहक रही,
वर्षा की नन्ही फुहार से सोंधी माटी महक रही।
जंगल में मंगल होने लगा चहुं ओर है हरियाली,
बाग बगीचे खेत खलिहान आई बड़ी खुशियाली।
रिमझिम बोछारों से नहा रही तपी वसुंधरा,
नदी तालाब भरने लगे नर-नारी का जी भरा।
हरी चूनर ओढ़ के हुआ भूमि का फूल सिंगार,
वन उपवन की झूमती डालियों में आई बहार।
बरखा ने दिया प्रकृति को नवजीवन उपहार,
सुहानी ऋतु भीगा तन मन खुशी मनाये संसार।

बसंत आगमन

वसुंधरा की गोद में शिशिर ग्रीष्म का नंदन है,
वंदन है अभिनंदन है ऋतुराज बसंत का वंदन है।
स्वर्ग सा सौंदय समेटे आया ऋतुराज बसंत है,
अवनी घेरों में ठंडी गर्मी वर्षा जोश का अंत है।
वन उपवन की मादक गलियों में सुंदर चंदन है,
वसुंधरा की गोद में शिशिर ग्रीष्म का नंदन है।
चंपा चमेली सेवंती जूही टेसू की चहुं ओर बहार है,
हरी-भरी प्रकृति में मंद मंद मुस्काती सौम्य बहार है।
धरा की छटा निराली देख मानव मन मनोरंजन है,
वसुंधरा की गोद में शिशिर ग्रीष्म का नंदन है।
पीत वसन पहने अवनी पवन धीरे चले पुरवाई,
नव पल्लव आने लगे सभी पुराने लें अंगड़ाई।
महकते बागों की कलियन में भौंरौं का गुंजन है,
वसुंधरा की गोद में शिशिर ग्रीष्म का नंदन है।
बसंत की मुस्कान से टेसू में छाई बहार है,
मीठे रस रंग से रंगों में आयी बहार है।
डालन पे अमुआ भरे पंछियों का क्षुधा भंजन है,
वसुंधरा की गोद में शिशिर ग्रीष्म का नंदन है।
आगमन पर मां शारदा अवतार से आनंद हुआ,
जिनकी ज्ञान वीणा से अज्ञान का सुर मंद हुआ।
बसंत बेला की मातु भवानी का तन-मन कंचन है,
वसुंधरा की गोद में शिशिर ग्रीष्म का नंदन है।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम : श्रीमती उमा सुहाने

जन्मतिथि : २४ दिसम्बर सन् १९५३ (जन्म स्थान-कटनी)

शिक्षा : बी.ए., आर्ट्स एण्ड क्राट डिप्लोमा ।

व्यवसाय : 'भगवती कला केन्द्र' की संचालिका

पारिवारिक पृष्ठभूमि :-

पिता-माता : स्मृति शेष श्री चन्द्रिका प्रसाद-सरोज मोर, कटनी

सास-ससुर : स्मृति शेष श्री रामदास जी सुहाने-श्रीमती रूकमणी

भाई-बहन : श्री कैलाशनाथ, शरदचंद्र मोर, डॉ. मनोरमा पिपरसानिया

बेटी-दामाद : श्रीमती अभिलाषा-प्रकाश सेठ

बेटा-बहू : श्री अभिषेक-ज्योति, आनंद-आभा, आशीष-स्नेहा

बगिया के फूल: शिवांश, दिव्यांश, आन्या, आदित्य, आन्शी, प्रनवी, शान्वी

साहित्य पृष्ठभूमि :-

संप्रति : स्वतंत्र अध्ययन लेखन, हिन्दी लेखिका संघ की आजीवन सदस्य, विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में कविताओं, गीतों, लेखों का प्रकाशन, सांझा संग्रह में भी प्रकाशन ।

प्रकाशित एकल पुस्तक : श्री रामनाम दोहावाली, अंतर्ज्योर्ति

सम्मान : कला क्षेत्र में लगभग १५ सम्मान पत्र, अंतरा शब्द शक्ति साहित्यकार स्वाभिमान सम्मान, हिन्दी लेखिका सम्मान आदि ।

पता : सुहाने भवन, श्री गोविंददास सुहाने, जनता होटल के पास, महावीर नगर, रायपुर (छ.ग.)

सम्पर्क : ९३०२६८२२९, ७८६९८०४६८०

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-061-2
मूल्य 60/-
शब्द सुगंध